प्रातः कालीन सन्धिप्रकाश रागों का ध्वन्यांकनाधारित सांगीतिक व प्रयोगधर्मी अध्ययन: विशेषकर गायन के सन्दर्भ में

संगीत विषय से पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

अपराजिता झा

सह शोध निर्देशिका

प्रो. सुधा सहगल

शोध निर्देशिका

प्रो. नीलू शर्मा

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

2024

भूमिका:

भारतीय शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति की परम्पराओं का परिचायक है तथा इसका संरक्षण व सम्वर्धन प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। लिखित रूप में किसी भी कला साहित्य को शताब्दियों में संरक्षित किया जाता रहा है। संगीत के संदर्भ में संरक्षण की इस श्रृंखला में ध्वन्यांकित सामग्री का महत्वपूर्ण योगदान है। ध्वन्यांकन एक ऐसा साधन है जिसमें प्रत्येक ज्ञान का संरक्षण होता है अतः बीसवीं शताब्दी में ध्वन्यांकन भारतीय संगीत को संरक्षित करने में सफल सिद्ध हुआ अर्थात हिन्दुस्तानी संगीत ध्वन्यांकित सामग्री के रूप में संरक्षित हो गया, फलतः आज इस शास्त्रीय संगीत से जुड़े सभी वर्ग के लोग इससे श्रवणोपरांत चिंतन करने, अभ्यास व आनंद हेतु लाभांवित हो रहे है। ध्वन्यांकन श्रोताओ,विद्यार्थियो, शोधार्थियो व शिक्षकों के लिए भी एक संग्रहालयवत है। आज ध्वन्यांकन के माध्यम से भिन्न-भिन्न घरानों के कलाकारों की गायन-वादन शैलियाँ उनके प्रस्तुतीकरण का ढंग, रागो का चुनाव, रागो के गायन का ढंग, स्वर लय व ताल प्रयोग, बंदिश आदि जैसे प्रत्येक बारीकियो को सुनने व समझने में ध्वन्यांकित सामग्री अथवा ध्वन्यांकन अपना विशेष योगदान दे रहा है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत रागों का अथाह सागर है जिसमें राग एक अद्भुत कल्पना है। संगीत मनीषियों ने शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत अनेक प्रकार के सिद्धांतो का प्रतिपादन किया जिसमें से एक सिद्धांत 'राग समय सिद्धान्त' का भी है। राग समय सिद्धांत उत्तर भारतीय संगीत की विशेषताओं में से एक है। शास्त्रकारो तथा संगीतकारो ने अपने अनुभव व मनोवैज्ञानिक आधार पर राग समय सिद्धांत को स्वीकार कर सर्वमान्य किया। राग समय सिद्धांत के विभिन्न वर्गीकरणों के अंतर्गत संधि प्रकाश राग आते है जो सर्वमान्य है। इनमे निहित राग सूचक स्वर समूह, स्वर लगाव,विशिष्ट स्वरसंगतियां, वादी - संवादी प्रयोग, न्यास प्रयोग इत्यादि का अपना एक विशिष्ट महत्व है यू तो प्रत्येक प्रहर के रागों कि अपनी विशिष्टताएँ होती है किन्तु शोधार्थीनी की रुचि, संधिप्रकाश रागों में अधिक है अतः उनको समझने अध्ययन करने सुनने व सीखने के लिए उत्कंठा का होना स्वभाविक है।

इन संधिप्रकाश रागों का अध्ययन करने के लिए, लिखित रूप में लिखित साहित्य, पुस्तको, शोध प्रबंधो, लघु शोध प्रबंधो, शोधपत्रों के रूप में विद्यमान है जिनके कारण आधारभूत सामग्री का अध्ययन किया जा सकता है किन्तु

संधिप्रकाश रागों में निहित कलात्मक, श्रृजनात्मकता, रचना सौष्ठव, स्वर विन्यास कि सूक्ष्मताओ/सूक्ष्मताएँ, विशिष्ठ राग चलन को क्रियात्मक विधि से ही सीखा व समझा जा सकता है जिसके लिए ध्वन्यांकित सामग्री को शोधार्थीनी ने एक सक्षम सामग्री के रूप में निरीक्षित किया है। प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित लिखित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक है अतः सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण कर निम्नवत साहित्य का सर्वेक्षन किया गया।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण –

पुस्तके:-

१. क्रमिक पुस्तक मलिका; पंडित भातखंडे {भाग 6} द्वारा लिखित है इन पुस्तकों में संधिप्रकाश रागों का लिखित साहित्य स्वरांकित कित रूप मे विद्यमान है। प्रस्तुत पुस्तक से शोधार्थिनी के प्रस्तावित शोध हेतु समुचित लिखित जानकारी प्राप्त होती है किन्तु ध्वन्यांकित सामग्री प्राप्त नहीं होती।

२. अभिनव गीतांजलि; पंडित रामाश्रय झा {भाग 4} इन बंदिशो की क्रियात्मक विधि ज्ञात नहीं होती।

३. संधिप्रकाश राग; प्रियंका कौशल द्वारा लिखित पुस्तक है जिसमे राग समय सिद्धांत तथा विशेष रूप से संधिप्रकाश काल व रागों की विस्तृत विवेचना की गई है साथ ही प्रतर्गेय संधिप्रकाश रागों की घरानेदार बंदिशों की स्वलिपियां भी लिखित है किन्तु बदिशो के क्रियात्मक स्वरूप को दर्शाने के लिए ध्वन्यांकित सामग्री प्राप्त नहीं होते है।

४. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग; डॉ. अनीता गौतम, द्वारा लिखित इस पुस्तक मे 20वीं शताब्दी में वैज्ञानिक उपकरणों के आने से किस प्रकार संगीत पर उसका प्रभाव पड़ा वहीं यह उपकरण संगीत के उत्थान में कितना सहायक रहा इस पर चर्चा की गई है किन्तु रागों के क्रियात्मक स्वरूप की कोई चर्चा इस पुस्तक में नहीं मिलती।

५. अभिनव गीतांजलि; पंडित रामाश्रय झा {भाग 5} द्वारा रचित पुस्तक है जिसके अन्तर्गत उन्होने कई संधि प्रकाश रागों का परिचय दिया साथ ही उसकी बंदिशे भी लयबद्ध की किन्तु इन रागों व इनकी बंदिशों का क्रियात्मक ध्वन्यांकन प्राप्त नहीं है।

६. संगीतान्जलि: स्व. पंडित ओमकारनाथ ठाकुर {भाग 1} जी द्वारा लिखित पुस्तक है जिसमे उन्होंने राग के मुख्य

तत्व 'संगीत' के मुख्य तत्व या उपकरण तथा रागो की बंदिशों की स्वरलिपियाँ दी है किन्तु इसका क्रियात्मक प्रमाण प्राप्त नहीं।

८. संगीतांजलि; पंडित ओमकारनाथ ठाकुर {भाग 4} जी की कृति है जिसमे इन्होने प्रतार्गेय संधिप्रकाश राग रामकली का शास्त्रीय विवरण उसके स्वरांकन के साथ दिया किन्तु इसकी ध्वन्यांकित सामग्री प्राप्त नहीं होती।

९. संगीतान्जलि; पंडित ओमकारनाथ ठाकुर {भाग 6} द्वारा रचित पुस्तक है जिसके अन्तर्गत प्रातः कालीन सन्धिप्रकाश राग ललित का शास्त्रीय परिचय उसके स्वरांकन सहित प्राप्त होते है किन्तु क्रियात्मक अध्ययन हेतु ध्वन्यांकित सामग्री प्राप्त नहीं होती।

१०. संगीतांजलि; पंडित ओमकारनाथ ठाकुर {भाग 5} जी द्वारा संकलित पुस्तक है जिसमें उन्होने प्रातर्गेय संधिप्रकाश राग विभास तथा कालिंगड़ा का शास्त्रीय विवरण उसके स्वरांकन के माध्यम से दिया है किन्तु इस स्वरांकन का कोई क्रियात्मक स्वरूप प्राप्त नहीं।

११. उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन का ध्वन्यांकित अध्ययन; डॉ. रामाकान्त द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तक।

१२. संगीत-चिन्तन; डा. सौभाग्यवर्द्धन बृहस्पति {प्रथम खण्ड} जी लिखित पुस्तक में राग ध्यान से चित्र के अन्तर्गत राग भैरव के ध्यान का चित्रण प्राप्त होता है किन्तु इसका कोई क्रियात्मक प्रामाण प्राप्त नहीं होता।

१३. नवीन ख़्याल रचनावली; पंडित शंकरलाल मिश्रा संगीताचार्य {भाग 2} जी द्वारा रचित ग्रन्थ के अंर्तगत उन्होंने प्रतार्गेय रागों की बंदिशो की रचना की साथ ही उसका स्वरांकन लिखित रुप में किया किन्तु, उसका क्रियात्मक प्रमाण ध्वन्यांकन के माध्यम से नहीं दिया।

१४. अभिनव गीतांजलि; पं. रामाश्रय झा (भाग 1) द्वारा रचित पुस्तक में राग भरियार व राग अहीर भैरव का शास्त्रीय परिचय व उसका स्वरांकन प्राप्त होता है किन्तु इसका क्रियात्मक स्वरूप प्राप्त नहीं होता।

१५. अभिनव गीतांजलि; पंडित रामाश्रय झा (भाग 5) द्वारा रचित प्रचलित ग्रन्थ के अंतर्गत उन्होने राग विभास व राग भंखार आदि रागो का स्वरांकन उसके शास्त्रीय परिचय सहित दिया है किन्तु क्रियात्मक रूप से इसका कोई उल्लेख नहीं किया।

१६. राग विशारद; डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग {भाग २} द्वारा रचित प्रचलित ग्रन्थों में से एक है जिसमें उन्होंने रागों का परिचय उसकी स्वरलिपि सहित दिया है किन्तु उसके क्रियात्मक स्वरूप को जानने के लिए कोई ध्वन्यांकित सामग्री प्राप्त नहीं।

१७. राग विशारद; डॉ. गीता बनर्जी {भाग एक} द्वारा लिखित पुस्तक प्राप्त है जिसके अंतर्गत रागों का शास्त्रीय पक्ष प्राप्त होता है किन्तु प्रायोगिक पक्ष नहीं मिलता।

१८. भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागो का परिचय; कुमकुम सहदेव जी द्वारा लिखित पुस्तक में भैरव अंग व भैरव के प्रकार रागों का परिचय प्राप्त होता है किन्तु क्रियात्मक पक्ष अथवा ध्वन्यांकन आदि प्राप्त नहीं होता है।

१९. संगीत मधुबन निबंध संग्रह; मधुबाला सक्सेना/राकेश्बाला सक्सेना जी द्वारा रचित पुस्तक के अध्याय १,२,३,८,१४ अत्यंत ही महत्वपूर्ण हुए है जिसके अंतर्गत राग,राग ध्यान, राग समय सिद्धांत, रिकोर्डिंगस, राग व आध्यात्म साथ ही राग व मनोविज्ञान आदि विषयो पर चर्चा की गई है किन्तु रागों के क्रियात्मक स्वरुप की कोई चर्चा प्राप्त नहीं होती।

२०. राग तरंग; डॉ.चमन लाल वर्मा/डॉ. विवेक वर्मा जी द्वारा लिखित पुस्तक है जिसके अंतर्गत भैरव ठाट जन्य रागों का परिचय मिलता है साथ ही कई बंदिशे प्राप्त होती है किन्तु उनका स्वरांकन प्राप्त नहीं होता।

२१. राग विश्लेषण; डॉ.उमा गर्ग {संयुक्त भाग १-२} द्वारा लिखित ग्रन्थ है जिसमे भैरव अंग के रागों का परिचय स्वरलिपि सहित प्राप्त होती है किन्तु इसका किसी भी प्रकार का ध्वन्यांकन प्राप्त नहीं होता।

२२. राग प्रवीण; पं.गणेश प्रसाद शर्मा जी द्वारा लिखित पुस्तक में भैरव अंग के रागों का शास्त्रीय परिचय प्राप्त होता है किन्तु इसका कोई क्रियात्मक स्वरुप ध्वन्यांकन के माध्यम से प्राप्त नहीं होता।

२३. राग-रंग; डॉ.चमन लाल वर्मा/डॉ. विवेक वर्मा जी द्वारा लिखित ग्रन्थ संकलन है जिसके अंतर्गत भैरव के प्रकार रागों का शास्त्रीय परिचय उसके बन्दिशो के साथ प्राप्त होती है किन्तु क्रियात्मक स्वरुप हेतु कोई ध्वन्यांकन प्राप्त नहीं होता।

२४. राग विज्ञान; पं.विनायक राव पटवर्धन जी ने अपनी कृति के 'द्वितीय भाग' के अंतर्गत प्रचलित राग-वर्गीकरण तथा थाट-पद्धति का विस्तृत उल्लेख करते हुए उसके सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पक्षों पर प्रकाश डाला।

२५. राग विज्ञान; पं वनायक राव पटवर्धन जी के द्वारा लिखित पुस्तक के 'तृतीय भाग' में पटवर्धन जी संधिप्रकाश

राग के बारे में बताते हुए कहते है की राग समय सिद्धांत के अनुसार निश्चित समय पर गाए जाने वाले राग अधिक प्रभावशाली होते है साथ ही संगीतज्ञो ने भी राग समय सिद्धांत को माना है।

२६. **निबंध संगीत; लक्ष्मीनारायण गर्ग** जी द्वारा रचित पुस्तक के अध्याय "राग और समय" के अंतर्गत राग गायन समय का अध्ययन किया गया जिसमे विशेष रूप से राग समय सिद्धांत तथा राग ऋतु का वर्णन किया।

२७. **गीत-समूह; गोविन्द नारायण नातू {भाग २}** जी द्वारा लिखित पुस्तक में रागों की बंदिशो की स्वरलिपि प्रदान की किन्तु किसी प्रकार का प्रयोगात्मक ध्वन्यांकन प्राप्त नहीं होता।

२८. **हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास; डॉ.सुनंदा पाठक** जी द्वारा रचित पुस्तक के षष्ठ अध्याय "राग का गायन समय तथा ऋतुओं से सम्बन्ध" में लेखिका ने राग रस सिद्धांत के अतिरिक्त शास्त्रीय संगीत के अन्य सिद्धांत जैसे राग समय सिद्धांत का भी उल्लेख किया। जिसमे उन्होंने राग का गायन समय तथा उनका ऋतुओं से सम्बन्ध पर चर्चा की।

२९. **NAD Understanding Raga Music; संदीप बागची** जी द्वारा लिखित ग्रन्थ के निम्न अध्यायो जैसे Ragas and moods, Ragas and times of day. के अंतर्गत बताया की प्रत्येक राग का अपना स्वयं का व्यक्तित्व व उसका गायन समय होता है। निश्चित समय पर प्रस्तुत किया गया राग श्रोताओ को अधिक प्रभावित करता हैं।

३०. **संगीतांजलि; स्व. पं. ओमकारनाथ ठाकुर {तृतीय भाग}** जी द्वारा रचित ग्रन्थ के अध्याय 'रागों का समय निर्धारण' में लेखक ने प्राचीन काल में गान क्रिया के समय निर्धारण की परम्परा पर प्रकाश डालते हुए कहा की यज्ञादि अवसरो पर साम गान करने वाले समाग भी प्रातः सवन, मध्यान सवन और सायनसवान ऐसे तीन काल विभागों में भिन्न-भिन्न प्रकार का गान गाते थे अतः जब से राग गायन आरंभ हुआ तब से ग्रंथों में राग गायन का समय निर्धारित हुआ।

३१. **संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धांत; सुभाष रानी चौधरी** जी द्वारा लिखित ग्रन्थ के अंतर्गत मेल अथवा थाट-प्रणाली का आधुनिक स्वरुप तथा भातखंडे जी पर लिखित लेख के अंतर्गत थाट की उत्पत्ति,निर्माण सम्बन्धी विषयो पर विद्वानों के अलग-अलग विचार प्रस्तुत किये तथा उनके विचारों में मतभेद भी पाए गए और अंततः इस निष्कर्ष पर पहुचे की थाट पद्धति अपनी कई कमियों के साथ-साथ कई विशेषताओ को लिए है तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पद्धतियो में से एक विशेष पद्धति है।

३२. **संगीत चिंतन; आचार्य कैलाशचंद्रदेव बृहस्पति** जी द्वारा लिखित पुस्तक के खण्ड 'राग ध्यान चित्र' में राग भैरव के

ध्यान की प्रक्रिया का उल्लेख किया। साथ ही यह भी बताया की रागों के स्वर व स्वर लगाव राग ध्यान में सहायक सिद्ध होते है।

३३. **संधि प्रकाश राग; डॉ.प्रियंका कौशल** जी के द्वारा रचित ग्रन्थ के अंतर्गत भारतीय शास्त्रीय संगीत के समय सिद्धांत में संधिप्रकाश काल व गाये-बजाय जाने वाले प्रचलित-अप्रचलित रागों का विश्लेषणात्मक अध्यन किया।

३४. **हिन्दुस्तानी संगीत की राग संपदा; डॉ. सुधा माथुर** जी द्वारा लिखित पुस्तक में लेखिका ने प्रचलित-अप्रचलित राग संपदा, अप्रचलित रागों का चलन, ताल चयन, भिन्न-भिन्न घरानो में भिन्न-भिन्न ढंग से अप्रचलित रागों का गायन-वादन आदि का विस्तृत उल्लेख किया साथ ही भैरव ठाट के अप्रचलित रागों का गहन अध्ययन कर वर्णन किया है।

३५. **हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का रागाधार 'ठाट' अथवा 'रागांग; डॉ. अंजलि रवि** जी द्वारा लिखित पुस्तक में अपना मत प्रस्तुत करते हुए लेखिका लिखती है की उत्तर भारतीय संगीत में राग समयानुसार राग गायन अधिक सफल सिद्ध हुआ तथा भातखंडे जी ने दस थाटो के अंतर्गत राग समय को समाविष्ट किया।

३६. **संगात राग परिचय; देवकीनंदन धवन** जी के द्वारा रचित पुस्तक के अन्तरगत राग गायन के समय विभाजन के विषय पर लिखा है जिसमे उन्होंने दिन के २४ घंटो को दो भागो में बटा तथा दिन के १२ बजे से रात्रि १२ बजे तक को पूर्व भाग व रात्रि १२ से दिन १२ बजे तक का समय उत्तर भाग बताया।

३७. **राग विशारद; {भाग २}लक्ष्मीनारायण गर्ग** जी द्वारा लिखित सांगीतिक ग्रन्थ में लेखक ने प्रचलित रागों की सविस्तार व्याख्या की साथ ही स्वरलिपि के माध्यम से राग का विश्लेषण किया किन्तु इसका कोई क्रियात्मक प्रमाण प्राप्त नहीं होता।

३८. **राग विशारद; {भाग १} लक्ष्मीनारायण गर्ग** द्वारा लिखित सांगीतिक पुस्तक में संधिप्रकाश रागों की चर्चा करते हुए बताया की रिषभ का कोमलत्व और गंधार, निषाद का तीव्रत्व वस्तुतः 'संधिप्रकाशवाचक' चिन्ह समझा जाता है। साथ ही साथ थाट भेद में उन्होंने बताया की थाट की उत्पत्ति सप्तक से होती है तथा सायांगेय और प्रातर्गेय रागों के सम्बन्ध पर भी चर्चा की व रागों का शास्त्रीय परिचय देते हुए स्वर लिपिबद्ध बंदिश भी प्रदान किया।

३९. **राग विज्ञान; {पंचम भाग}पं. विनायकराव पटवर्धन** जी द्वारा लिखित बहुप्रचलित ग्रन्थ में भैरव ठाट जन्य रागों की व्याख्या की जिसमे उन्होंने राग के विभिन्न आयामो जैसे:- राग विशेषता,स्वर लगाव, स्वर समूह व स्वरलिपि सहित बंदिशे प्रदान की।

४०. राग विज्ञान; {सप्तम भाग} पं. विनायकराव पटवर्धन जी द्वारा लिखित प्रचलित पुस्तक में लेखक राग के प्रायोगिक व सैधांतिक पहलुओ पर प्रकाश डाला किन्तु इसकी किसी भी प्रकार की रिकार्डिंग प्राप्त नहीं।

४१. क्रमिक पुस्तक-मलिका; {भाग ५} पं. विष्णु नारायण भातखंडे जी द्वारा लिखित ग्रन्थ में भैरव अंग के प्रचलित रागों का संपूर्ण शास्त्रीय परिचय दिया साथ ही बन्दिशो के माध्यम से राग चलन को बताया किन्तु इसका ध्वन्यांकन प्राप्त नहीं होता।

४२. संगीतान्जलि; पु० ओंकारनाथ ठाकुर {भाग ३} द्वारा संकलित पुस्तक है जिससे उन्होने राग - प्रकृति, रस-भाव, रागों का समय निर्धारण तथा प्रतर्गेय संधिप्रकाश राग भैरव का शास्त्रीय विवरण दिया व उनकी बंदिशो को लिपिबद्ध किया किन्तु क्रियात्मक स्वरूप के अध्ययन हेतु ध्वन्यांकित सामग्री प्राप्त नहीं।

शोध प्रबंध:

१. रागो के समय सिद्धांत का मोनोवैज्ञानिक विश्लेषण (संधिप्रकाश रागो के विशेष संदर्भ में); 'प्रीतम प्यारी' जी द्वारा लिखित शोध प्रबंध के अंतर्गत राग समय सिद्धान्त व मुख्य रूप से संधिप्रकाश काल व रागों के संदर्भ मे वृहत चर्चा की किन्तु रागों के क्रियात्मक पक्ष व उसके ध्वन्यांकन आदि पर कोई चर्चा की गई।

२. हिन्दुस्तानी संगीत के दस थाटो के कतिपय रागों की बंदिशों के विविध स्वरूप: विश्लेषणात्मक अध्ययन;"लवी माहेश्वरी जी द्वारा लिखित शोध प्रबंध है जिसमें उन्होने संगीत के दस थाटो से उत्पन्न रागों के प्रयोगात्मक पक्ष को बंदिशो व उसकी स्वरलिपि के मध्यम से बताया किन्तु रागों के क्रियात्मक स्वरूप की कोई चर्चा नहीं की व ना ही कोई ध्वन्यांकित समग्री प्रदान की।

३. रात्रिगेय पाँच रागांग रागो की बंदिशो का सांगीतिक अध्ययन; शोधार्थिनी चारु रानी 'जी द्वारा रचित शोध प्रबंध है जिसके अन्तर्गत उन्होने राग समय सिद्धांत की कोई चर्चा नहीं की साथ ही रागों के क्रियात्मक स्वरूपो का ध्वन्यांकन प्रदान नहीं किया।

४. भारत रत्न पं. रविशंकर जी द्वारा रचित नवीन रागो का विश्लेषणात्मक अध्ययन; शोधार्थी- 'प्रगती द्विवेदी' जी द्वारा सन 2021 पो.एच.डी. की उपाधि हेतु शोध प्रबंध, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा, उत्तर प्रदेश

प्रस्तुत शोध के पंचम अध्याय में पंडित रविशंकर जी द्वारा निर्मित प्रतर्गेय राग नट भैरव रागों की वृहत् चर्चा की गई

है किन्तु इन रागों के क्रियात्मक पक्ष की चर्चा अथवा ध्वन्यांकित सामग्री प्राप्त नहीं होते हैं।

५. बीसवीं शताब्दी के कतिपय मूर्धन्य वाग्नेकारो द्वारा निर्मित नवीन राग रूपों का संगीतिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन; शोधार्थी डिंपल शर्मा जी द्वारा सन 2014 में पीएचडी की उपाधि हेतु प्रबंध रचित है। प्रस्तुत प्रबंध के षष्ठ अध्याय में पंडित रवि शंकर जी द्वारा निर्मित नवीन रागों में से राग नट भैरव व बैरागी भैरव जैसे प्रतार्गेय रागों का शास्त्रीय विश्लेषण किया किंतु रागो की क्रियात्मक पक्ष व उसकी ध्वन्यांकित सामग्री आदि प्रदान नहीं की गई।

६. Samaya Ragas - A Critical Study of Their Relevance to Music

प्रस्तुत शोध शोधार्थिनी जया के. एस. जी द्वारा पी. एच. डी. की उपाधि हेतु किया गया जिसके अन्तर्गत शोधार्थिनी ने राग समय सिद्धांत की विस्तृत विवेचना, करते हुए उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय रागों की चर्चा भी की किंतु रागो के क्रियात्मक पक्ष पर किसी प्रकार से प्रकाश नहीं डाला ना ही कोई ध्वन्यांकित सामग्री प्रदान किया।

७. 20वीं शताब्दी में वैज्ञानिक उपकरणों के कारण संगीत के प्रयोग में हुए परिवर्तनों का आंकलन; शोधार्थी - कुमारी अनिता गौतम जी द्वारा लिखित सन 1998 में पी. एच. डी. की उपाधि हेतु शोध प्रबंध है जिसके अंतर्गत वैज्ञानिक प्रगति तथा वैज्ञानिक उपकरणो का हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में पढ़ने वाले प्रभाव की विस्तृत व्याख्या की गई किंतु राग संगीत व प्रयोगात्मक आदि पक्षों की कोई चर्चा शोध में प्राप्त नहीं हुई।

८. "उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के भैरव ठाट के रागों की समीक्षा और इसमें समाविष्ट रस:एक अध्ययन" प्रस्तुत शोध शोधर्थिनी किंजल भोसले जी द्वारा लिखित प्रबंध है जिसके तृतीय अध्याय के अंतर्गत भैरव थाट का उद्भव एवं विकास तथा भैरव थाट के पूर्वांगवादी राग व उत्तरांगवादी रागों तथा भैरव ठाट के रागों की विस्तृत व्याख्या व अध्ययन किया गया किन्तु इसका कोई ध्वन्यांकित प्रमाण प्राप्त नहीं होता।

लघु शोध प्रबंध –

१. कतिपय रागांग रागो की बंदिशो का सांगीतिक अध्ययन; शाधार्थिनी चारु रानी, सन् 2012 में एम०फिल की उपाधि हेतु किया गया अध्ययन है। शोध प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में रागांग राग भैरव की विस्तृत चर्चा की गई किंतु इसके क्रियात्मक पक्ष की कोई व्याख्या प्राप्त नहीं होती वही किसी प्रकार का ध्वन्यांकन भी प्राप्त नहीं होता है।

२. Essence of spirituality in Raags of Hindustani and Carnatic music system; शाधार्थिनी कुमारी बिनती

जी द्वारा लिखित लघु शोध के अंतर्गत हिन्दुस्तानी व कर्नाटक संगीत के धीर गम्भीर राग जो अपने भीतर आध्यात्मिकता लिए हुए है उनके प्रयोगात्मक पक्ष का वृहद विश्लेषण किया गया किन्तु क्रियात्मक पक्ष का सत्यापन ध्वन्यांकन के मध्यम से प्राप्त नहीं होता।

३. उत्तर भारतीय कतिपय प्रचलित रागो का विभिन्न घरानो मे स्वरूप एवं उनकी विवेचना; शोधार्थिनी योगिता सारस्वत जी द्वारा लिखित एम.फिल. की उपाधि हेतु सन 2009 में लिखित लघु शोध प्रबंध।

शोध लेख:

१. नई उपलब्धियां से भरी दूसरी सहस्राब्दी; डॉ मुकेश गर्ग। {सहस्राब्दी संगीत अंक 2001 जनवरी–फरवरी}

इसके अंतर्गत लेखक ने भारतीय संगीत में काल क्रम से चले आने वाले परिवर्तन ग्रंथो के माध्यम से बताया जिसमें संगीत की अनेक पद्धतियों का वर्णन किया साथ ही साथ राग समय सिद्धांत का भी संक्षेप में उल्लेख किया।

२. 20वीं शताब्दी और हिंदुस्तानी संगीत; डॉ माया टाक।

उपयुक्त शोध लेख में लेखिका ने 20वीं शताब्दी में संगीत जगत में टेक्नोलॉजी के आविर्भाव से होने वाले सकारात्मक प्रभावों का उल्लेख किया।

३. संगीत के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण; {संकलनकर्ता- प्रदीप कुमार रावत}प्रस्तुत शोध में लेखक ने टेक्नोलॉजी इलेक्ट्रॉनिक्स के आ जाने से संगीत के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण-संवर्धन में जो सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं उन ध्वन्यांकित उपकरणों की चर्चा विस्तृत रूप से की है।

४. संगीत शिक्षा और नई टेक्नोलॉजी; {डॉ. निशि जैन}

प्रस्तुत लेख के अंतर्गत लेखिका संगीत शिक्षा में टेक्नोलॉजी के आ जाने से किस प्रकार संगीत का उचित विकास हो रहा है साथ ही विद्यार्थी ध्वन्यांकित सामग्रियों द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं।

५. शास्त्रीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा की संभावनाएं; {डॉ. विद्याधर व्यास}

इस शोध के माध्यम से लेखक बताते हैं कि वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता व ध्वनि मुद्रणों द्वारा संगीत शिक्षा का प्रचार प्रसार दूरस्थ विद्यार्थियों को भी लाभान्वित कर रहे हैं।

ध्वन्यांकित सामग्री:

- Raag Shivmat Bhairav; Pt. Mallikarjun Mansur [Pratam Allah] 2017, [video file], retrieved from https://youtu.be/SgqF7BfN1JE?si=7mWvKcIu4yiMb6Q4
- INTRODUCTION AND RAAG SHIVMAT BHAIRAV; PROF. ARCHANA DIXIT 2020, [video file], retrieved from https://youtu.be/1i-N6shzOwA?si=qUOHsQJgkN5z_azs
- Raag Shivmat Bhairav; Pandit K.G. Ginde 2021, [video file] retrieved from https://youtu.be/60kkgUt78ts?si=wA7rKsJDkQyuDwSq
- Raag Bhairav [Ab dekho tu_Dhamar];Pt.Ajoy chakraborty/Anol Chatterjee_pt.Yogesh Samsi, 2017 [video file] retrieved from https://youtu.be/fVnQiO3piAo?si=pjC97TXaDAz2WdPG
- Raag Bhairav [Allah O Allah, Sadara]; Pt. Ajoy chakraborty,2017 [video file] retrieved from https://youtu.be/iP0fHqBNKzw?si=MMuTrCmIdzNP0Ss8
- What Is Dhrupad And Khayal Style Of Singing; By Deepa Shani, 2018 [video file] retrieved from https://youtu.be/JAiJah_lkWY?si=Fxe4C8P4PlIcobcf
- Raag Ahir Bhairav [Dhrupad lecture demonstration]; Pt. Uday Bhawalkar, 2016 [video file] retrieved from https://youtu.be/z8kK2DW5bRw?si=2jHjJSKRYOrwev8z
- Raag Anand Bhairv [Khayal]; Pt. Ramashray Jha, 2021 [video file] retrieved from https://youtu.be/QShG9P4Ei5E?si=ctXaCacstmxpv5Xa
- Raag Bhairav [Vilambit, Madhaya And Drut Khayal]; Pt. Sanjeev Abhyankar, 2015 [video file] retrieved from https://youtu.be/_EAReSFe1ZA?si=7j1ul8UqGodiHJ33
- Raag Nat Bhairav [Tarana]; Vidushi Kaushiki Charaborty,2019 [video file] retrieved from https://youtu.be/5CP1sgrmovk?si=Om0_GHt6vobTY05y
- Raag Ramkali; Prof. B.R. Deodhar, 2020 [video file] retrieved from https://youtu.be/wo0PAIVvEps?si=VvSW9D_954htZSZm
- Raag Ramkali [Khayal]; Pt. D.V. Paluskar, 2021 [video file] retrieved from https://youtu.be/F22c85xmSPM?si=Z-cZ6mbr-FDgHhYr
- Raag Bhairav [Chota Khayal Teentaal, Prabhu Data Saban Ke]; Vidushi Subhra Guha {Agra Gharana},2014 [video file] retrieved from https://youtu.be/3khuCX8OZrk?si=ELkyksoqMV3fccUA

- Raag Bhairav [Khayal Ektaal Madhyalay Bandish, Uthat Baaj Murli Aaj]; Vidushi Kaushiki Chakraborty,2023 [video file] retrieved from https://youtu.be/QmyVUJVSGkE?si=FZx7MyBnYvUwkIpX

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का सार व शोध अंतराल :-

उपरोक्त संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन करने के पश्चात तथा ध्वन्यांकित सामग्री के श्रावणोपरांत शोधकर्त्री ने पाया की लिखित रूप में विभिन्न संधि प्रकाश रागो में बंदिशे अथवा रचना विद्यमान तो होती है किंतु क्रियात्मक स्तर पर ध्वन्यांकित सामग्री के आधार पर रागों को सरलता एवं सूक्ष्मताओं सहित सीखा जा सकता है अतः रागों के विभिन्न सूक्ष्मताओं का अध्ययन करने के लिए विशिष्ट राग सूचक स्वर समूह को समझने के रागाधारित स्वर लगाव को जानने के लिए विभिन्न राग प्रधान सौंदर्यात्मक तत्वों को सीखने की दृष्टि से ध्वन्यांकित सामग्री का आश्रय लेते हुए निम्न विषय का चयन किया है। किसी भी लिखित साहित्य में ध्वन्यांकित सामग्री का अभाव होना शोध अंतराल को स्पष्ट करता है तथा इस अंतराल की पूर्ति इस शोध में की जाएगी।

विषय कथन:-

गायन प्रधान प्रातः कालीन रागों का ध्वन्यंकनाधारित सांगीतिक व प्रयोगधर्मी अध्ययन

विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :

-ध्वन्यंकित [वि.एक.पु.] ध्वनि+अंकित =ध्वन्यंकित

-कत प्रत्यय प्रयुक्त करने के पश्चात शब्द निर्धारण।

-अर्थात जो ध्वनि द्वारा अंकित हो।

-जिसका अंकन ध्वनि के माध्यम से हो ध्वन्यांकन कहलाता है।

-वर्तमान समय में ध्वनि मुद्रण को भी ध्वन्यांकन के नाम की संज्ञा दी जाती है।

-सामग्री: [सं. स्त्री.]

किसी विशेष कार्य में उपयोग आने वाले पदार्थ, सामग्री, साधन।

[भार्गव आदर्श हिंदी शब्दकोष, पं.राम चंद्र पाठक बी.ए. ,एल.टी.]

-सामग्री: [स्त्री.]

सामान, वे पदार्थ जिनका किसी कार्य – विशेष में प्रयोग होता हो।

[हिंदी व्युत्पत्ति कोष, डा.नरेश कुमार]

-प्रयोगात्मक: [सं. वि.]

प्रयोग सम्बन्धी।

[संस्कृत हिंदी शब्दकोष, वामन शिवराम आप्टे]

-प्रयोगधर्मी: [वि.]

प्रयोगो पर विश्वास करने वाला; प्रयोगवादी ।

[हिन्दवी शब्दकोष]

-राग: राग शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम मतंग कृत वृहद्देशी में हुआ है। मतंग मुनि ने 'राग' की भिन्न भिन्न परिभाषाए प्रस्तुत की है-

"स्वर वर्ण विशेषण ध्वनि भेदेन वा पुनाः।
रंजय्ते येन य कश्चित स: राग: समत: सताम"।।

अर्थात वे विशिष्ट स्वर, वर्ण या ध्वनि भेद जिसमे मानव हृदय को रंजित करने का सामर्थ्य हो, वह राग है ।

"योअसो ध्वनि – विशेषस्तु स्वर वर्ण विभूषित:।
रंजको जन चित्तानां स च राग उदाहृत"।।

अर्थात स्वर षड्जादि, वर्ण,स्थाई आदि से विभूषित ऐसी ध्वनि-रचना जिससे जन-मन का रंजन होता है, उसे राग कहते है।

-राग: [पु.]

वह ध्वनि जो किसी विशिष्ट ताल में बैठाई हुई हो और जो मनोरंजन के लिए गयी जाती है।

[हिंदी व्युत्पत्ति कोष, डा.नरेश कुमार]

-Raag: Indian melodic type first mentioned in 5th century AD. various Raga systems have developed over the centuries. A raga comprises an unchangeable series of notes presented as an ascending and descending scale, some notes being used only in the ascending part, others only in the descending. Ragas are associated with moods e.g. loneliness, bravery, eroticism and with particular times of day or year or with certain ceremonial occasions.

From: [The concise oxford dictionary of music by MICHAEL KENNEDY, fourth edition.]

-संधिप्रकाश: दिन व् रात्रि जैसे दो वेलाओ की संधि को ही संधिप्रकाश की संज्ञा दी गयी है तथा संधिप्रकाश काल में गाये जाने वाले रागों को संधि प्रकाश राग कहते है।

-Sandhi means a junction the passing of night into day and day into night. [B.C. Deva, 1995, P.20]

अध्ययन की आवश्यकता :-

- प्रस्तावित शोध प्रबंध की आवश्यकता ध्वन्यांकित प्रातः कालीन सन्धि प्रकाश रागों के क्रियात्मक/प्रयोगात्मक स्वरूप को उजागर करने में है।
- शोधकर्त्री चूंकि गायन की छात्रा है अतः यह आवश्यक है कि उसके ज्ञानार्जन, रुचि, जिज्ञासा व उत्कंठा को देखते हुए रागों के संरक्षित पक्ष पर कार्य करके शोध को प्रमाणिक नवीनता प्रदान की जाए ऐसा शोधकर्त्री का मनना है।
- प्रस्तावित शोध की आवश्यकता विभिन्न रागों की सांगीतिक रचनाओं को उजागर कर सीखने व सिखाने में भी है ध्वन्यांकन के माध्यम से संरक्षित रागों व रचनाओ को शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रयुक्त करने की आवश्यकता है।
- यह भी आवश्यक है कि प्रस्तावित शोध प्रबंध के माध्यम से ध्वन्यांकित रचनाओं में को स्वरांकित किया जाए जिससे भविष्य में आने वाले विद्यार्थी व शोधार्थी लाभान्वित हो सके।

अध्ययन का महत्व:-

- प्रथम प्रस्तुत शोध प्रबंध रागों के गहन अध्ययन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है ध्वन्यांकित सामग्री के रूप में संरक्षित रागों के क्रियात्मक एवं प्रयोगात्मक स्वरूप का विस्तृत अध्ययन राग व गायन के भिन्न-भिन्न पहलुओं से परिचित करने में सफल सिद्ध होगा।
- क्योंकि शोधर्थिनी ने यह पाया कि कहीं तो केवल राग ग्रंथों तक सीमित है जिसका प्रायोगिक पक्ष ध्वन्यांकन के रूप में प्राप्त नहीं होता वहीं दूसरी ओर राग ध्वन्यांकित सामग्री के रूप में प्राप्त होता है जिसका शास्त्र लिखित रूप से प्राप्त नहीं होता।
- दोनों ही सूरतो में राग को समझना विद्यार्थियों के लिए कठिन हो जाता है अतः इसीलिए ध्वन्यांकनाधारित रागों का वृहद अध्ययन व विश्लेषण कर उसे शास्त्रबद्ध करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है जिससे भविष्य में अन्य शोधार्थियो अथवा संगीत के विद्यार्थियो को राग के शास्त्र एवं प्रायोगिक पक्ष को समझने में सुगमता व सहजता प्राप्त हो।

मुख्य उद्देश्य:-

- प्रातःकालीन सन्धिप्रकाश रागों की गायन सम्बन्धी ध्वन्यांकित सामग्री खोजना।
- चयनित ध्वन्यांकित सामग्री में से विभिन्न गायन शैलियों का श्रवण व अध्ययन कर प्रातः कालीन सन्धिप्रकाश रागों की रचनाएँ एकत्रित करना।
- प्रातःकालीन सन्धिप्रकाश रागों की विशिष्टताओं का श्रवण व अध्ययन कर उनमें शिक्षण सम्बन्धी पाठ तैयार करना।
- ध्वन्यांकन प्रधान राग व ताल विशिष्टताओं को विश्लेषित कर लिपिबद्ध करना।

गौण उद्देश्य:-

- विभिन्न आकाशवाणी केंद्र,दूरदर्शन केंद्रो, अकादमियों से एवं पुस्तकालयों से ध्वन्यांकित सामग्रियों को एकत्रित करना।
- विभिन्न गायक कलाकारों के साक्षात्कार कर प्रासंगिक सामग्री जुटाना।
- विभिन्न पत्र, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों अभिलेखो से शोध प्रधान विषय सामग्री एकत्रित करना।

विषय का परिसीमांकन:-

कार्य एवं समय सीमा को देखते हुए शोध को १२ प्रचलित और ८ अप्रचलित रागों तक परिसीमित किया जायेगा। साथ ही साथ ध्वन्यांकित सामग्री से प्राप्त हुई विभिन्न तालो में से प्रमुख ४ तालो का अध्ययन किया जायेगा। इसके साथ ही ध्रुपद, धमार, विलम्बित ख़याल, द्रुत ख़याल एवं तराना सम्बन्धी १० गायक/गायिका कलाकारों को अध्ययन के लिए चयनित किया जाएगा।

कार्यविधि एवं उपकरण :

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षणात्मक व व्याख्यात्मक विधियों का प्रयोग किया जाएगा तथा विभिन्न पुस्तकालयों, संस्थाओं तथा अकादमयों से सामग्री प्राप्त की जाएगी। इस क्षेत्र के कलाकारों, विद्वानों तथा लेखकों द्वारा साक्षात्कार के आधार पर जानकारी प्राप्त हो जायेगी। रेडियो, टी० वी० व इंटरनेट के माध्यम से भी सूचनायें एकत्रित की जाएगी। विभिन्न रिकार्डिंग (Recording) अथवा ध्वन्यांकित सामग्री का प्रयोग भी किया जाएगा।

अध्यायों का विभाजन:-

प्रथम अध्याय - सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन।

द्वितीय अध्याय -आधुनिक ध्वनि मुद्रण, विभिन्न ध्वन्यांकन प्रकार व संगीत।

तृतीय अध्याय - सन्धि प्रकाश प्रातः कालीन 'राग' सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय - ध्वन्यांकित सामग्री, विभिन्न गायन शैलियाँ व प्रातः कालीन रागों में विविध प्रयोग।

पंचम अध्याय - ध्वन्यांकन प्रधान गायन शैलियों में प्रातः कालीन सन्धि प्रकाश रागों एवं तालो का विश्लेषण।

निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

पुस्तकें:-

१. गौतम अ. {२००२ , २०१६} “भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग” ,कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, अंसारी रोड दरियागंज।

२. बनर्जी गी.{२०१४} “राग शास्त्र” {भाग १} संगीत सदन प्रकाशन, साऊथ मलाका इलाहाबाद।

३. सहदेव कु.{१९९५} “भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का परिचय” , राजस्थानी ग्रंथगार, जोधपुर राजस्थान।

४. गर्ग एल.{२०१२} “राग विशारद” {भाग २} संगीत कार्यालय, हाथरस।

५. झा आर.{२०००} “अभिनव गीतांजलि” {भाग ५} संगीत सदन प्रकाशन, साऊथ मलाका इलाहाबाद।

६. झा आर.{१९९५} “अभिनव गीतांजलि” {भाग ४} संगीत सदन प्रकाशन, साऊथ मलाका इलाहाबाद।

७. कौशल पि. {२००४} “संधि प्रकाश राग” संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।

८. वर्मा च.ल./ वर्मा वि. {२००९} “राग तरंग” कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

९. गर्ग उ. {२००४} “राग विश्लेषण” {संयुक्त भाग १-२} संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।

१०. शर्मा प्र.ग.{१९६२} “राग प्रवीण” कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।

११. वर्मा च.ल./ वर्मा वि. {२०१८} “राग – रंग” कनिष्क पब्लिशिंग हाउस।

१२. बृहस्पति एस. {२००४} “संगीत चिंतन”{प्रथम खंड} अभिषेक पब्लिकेशंस।

१३. मिश्रा एस. {२००८} “नवीन ख्याल रचनावली” {भाग २} अभिषेक पब्लिकेशंस।

१४. सक्सेना आर./सक्सेना एम.{२००१} “संगीत मधुबन निबंध संग्रह” , अभिषेक पब्लिकेशन्स, चंडीगढ़।

१५. गर्ग एल. {१९७८} : "निबंध संगीत", "संगीत कार्यालय", हाथरस , पृष्ठ 283-288.

१६. ठाकुर ओ. {१९९९}:"संगीतांजली" [तृतीय भाग] पंडित ओमकारनाथ ठाकुर मेमोरियल ट्रस्ट, पृष्ठ 15-18.

१७. BAGCHEE S. {१९९८}: “NAD Understanding Raga Music” Business Publications INC, Page 82-88.

१८. माथुर एस.{२००६}: "हिन्दुस्तानी संगीत संपदा", ‘संजय प्रकाशन दिल्ली’ पृष्ठ 18-24.

१९. रवि ए. {२०१८} : "हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत 'थाट' अथवा रागांग", कनिष्क परिलशिंग हॉउस, पृष्ठ 54-70.

२०. पाठक एस. {१९८९}: "हिन्दुस्तानी संगीत मे राग की उत्पत्ति एवं विकास", राधा पब्लिकेशंस दिल्ली , पृष्ठ 285 – 299.

२१. धवन डी.{२०११}: “संगीत राग परिचय [भाग १]”,संगीत कार्यालय हाथरस, पृष्ठ 125-131.

२२. गर्ग एल.{२०१२}: “राग विशाराद” [भाग २], संगीत कार्यालय हाथरस, पृष्ठ 268-269.

२३. पटवर्धन वि.{१९६१}: “राग-विज्ञान” [सप्तम भाग], डॉ.मधुसूदन पटवर्धन, पृष्ठ 1-4, 13-15.

२४. पटवर्धन वि.{१९४६}: “राग-विज्ञान” [तृतीय भाग], डॉ.मधुसूदन पटवर्धन, पृष्ठ 13.

२५. पटवर्धन वि.{१९३९}: “राग-विज्ञान” [द्वितीय भाग], डॉ.मधुसूदन पटवर्धन, पृष्ठ 5-13.

२६. नातू जी.एन.{१९७९}: “गीत समूह” [भाग २], उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ-१, पृष्ठ 2.

२७. झा आर.{२०००}: “अभिनव गीतांजलि” [भाग ४], संगीत सदन प्रकाशन, पृष्ठ- 25-40.

२८. चौधरी एस.आर.{२००२}: “संगीत के प्रमुख शास्त्रीय सिद्धांत" कनिष्क पब्लिशर्स डिस्टीब्यूटर्स, पृष्ठ- 109-114.

२९. गर्ग एल.{२०१०}: “राग-विशारद” [भाग पहला] छठवां संस्करण, संगीत कार्यालय, हाथरस, पृष्ठ 20-27, 51-52, 349-351. ३०.भातखंडे वि.{२०१२}: “क्रमिक पुस्तक-मलिका” [भाग पांच] संगीत कार्यालय हाथरस, पृष्ठ-

302-322.

३१. पत्की जे.ते.{१९५७}: “अप्रकाशित राग” [भाग १], संगीत कार्यालय हाथरस।

३२. शुक्ल ब्रजभूषण: “भैरव ठाट के रागों का सैधांतिक अध्ययन एवं क्रियात्मक विश्लेषण, पृष्ठ – ७८

३३. त्रिशाद जे. ‘विनय’ {१९९१} “भैरव के प्रकार” , संगीत कार्यालय हाथरस।

शोध प्रबंध:-

१. किंजल बी.{२०१८}: "उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के भैरव थाट के रागों की समीक्षा और इसमें समाविष्ट रस: एक अध्ययन", सौराष्ट्र युनिवर्सिटी राजकोट, पृष्ठ - 87-100,117 -119, 168-171।

२. प्यारी पी.{१९९८}: “रागों के समय सिद्धांत का मनोविज्ञान विश्लेषण {संधिप्रकाश रागों के विशेष सन्दर्भ में}” दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्युट,आगरा, उत्तर प्रदेश।

३. महेश्वरी एल.{२००९}: “हिन्दुस्तानी सनगीत के दस थाटो के कतिपय रागों की बन्दिशो के विभिन्न स्वरुप:विश्लेष्णात्मक अध्ययन” {डी.ई.आई, आगरा यू.पी.}।

४. रानी चा.{२०१९}: “रात्रिगेय पांच रागांग रागों की बन्दिशो का सांगीतिक अध्ययन” {डी.ई.आई, आगरा यू.पी.}।

५. द्विवेदी प्र.{२०२१}: “भारतरत्न पं. रविशंकर जी द्वारा रचित नवीन रागों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन” {डी.ई.आई, आगरा यू.पी.}।

६. शर्मा डी.{२०१४}: “बीसवीं सदी के कतिपय मूर्धन्य वाग्येकारों द्वारा निर्मित नवीन राग रूपो का सांगीतिक व विश्लेष्णात्मक अध्ययन” {डी.ई.आई, आगरा यू.पी.}।

७. गौतम अ.{१९९८}: “बीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिक उपकरणों के कारण संगीत के प्रयोग में हुए परिवर्तनों का आंकलन” {डी.ई.आई, आगरा यू.पी.}।

८. Jaya K.S. {2006}: “SAMAYA RAGAS – A CRITICAL STUDY OF THEIR RELEVANCE TO MUSIC” University of Kerala.

लघु शोध प्रबंध:-

१. रानी चा.{२०१२}: “कतिपय रागांग रागों की की बन्दिशो का सांगीतिक अध्ययन” {डी.ई.आई, आगरा यू.पी.}।

२. सारस्वत यो.{२००९}: “उत्तर भारतीय कतिपय प्रचलित रागों का विभिन्न घरानो में स्वरुप एवं उनकी विवेचना” {डी.ई.आई, आगरा यू.पी.}।

३. Binti G. {2009}: “ESSENCE OF SPIRITUALITY IN RAAGS OF HINDUSTANI AND CARNATIC MUSIC SYSTEM” {D.E.I. AGRA, UTTAR PRADESH}

शोध लेख:-

१. रावत के.पी. {अंक २००१ जनवरी –फरवरी}: “संगीत के इलेक्ट्रानिक उपकरण” सहस्राब्दी संगीत।

२. गर्ग मु.{अंक २००१ जनवरी –फरवरी}: “नई उपलब्धियो से भरी दूसरी सहस्राब्दी” सहस्राब्दी संगीत।

३. टाक एम्.{अंक २००१ जनवरी –फरवरी}: “बीसवीं शताब्दी और हिन्दुस्तानी संगीत” सहस्राब्दी संगीत।

४. जैन नि.{अंक २००१ जनवरी –फरवरी}: “संगीत शिक्षा और नई टेक्नोलोजी” सहस्राब्दी संगीत।

५. व्यास वि.{अंक २००१ जनवरी –फरवरी}: “शास्त्रीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा की संभावनाए” सहस्राब्दी संगीत।

ध्वन्यांकित सामग्री:

1. Pt. Mansur M. {2017}; Raag Shivmat Bhairav “Pratam Allah” [video file] retrieved from https://youtu.be/SgqF7BfN1JE?si=7mWvKcIu4yiMb6Q4
2. PROF. DIXIT A. {2020}; INTRODUCTION AND RAAG SHIVMAT BHAIRAV [video file], retrieved from https://youtu.be/1i-N6shzOwA?si=qUOHsQJgkN5z_azs
3. Pandit Ginde K.G. {2021}; Raag Shivmat Bhairav [video file] retrieved from https://youtu.be/60kkgUt78ts?si=wA7rKsJDkQyuDwSq
4. Pt. chakraborty A./Chatterjee A./Pt. Samsi Y. {2017}; Raag Bhairav “Ab dekho tu_Dhamar” [video file] retrieved from https://youtu.be/fVnQiO3piAo?si=pjC97TXaDAz2WdPG
5. Pt. chakraborty A. {2017}; Raag Bhairav “Allah O Allah” {sadara} [video file] retrieved from https://youtu.be/iP0fHqBNKzw?si=MMuTrCmIdzNP0Ss8
6. Shani D. {2018}; What Is Dhrupad And Khayal Style Of Singing [video file] retrieved from https://youtu.be/JAiJah_lkWY?si=Fxe4C8P4PlIcobcf
7. Pt. Bhawalkar U. {2016}; Raag Ahir Bhairav “Dhrupad lecture demonstration” [video file]

retrieved from https://youtu.be/z8kK2DW5bRw?si=2jHjJSKRYOrwev8z

8. Pt. Jha R. {2021}; Raag Anand Bhairv "Khyal" [video file] retrieved from https://youtu.be/QShG9P4Ei5E?si=ctXaCacstmxpv5Xa
9. Pt. Abhyankar S. {2015}; Raag Bhairav "Vilambit, Madhaya And Drut Khayal" [video file] retrieved from https://youtu.be/_EAReSFe1ZA?si=7j1ul8UqGodiHJ33
10. Vidushi Charaborty K. {2019}; Raag Nat Bhairav "Tarana" [video file] retrieved from https://youtu.be/5CP1sgrmovk?si=Om0_GHt6vobTY05y
11. Prof. Deodhar B.R. {2020}; Raag Ramkali [video file] retrieved from https://youtu.be/wo0PAIVvEps?si=VvSW9D_954htZSZm
12. Pt. Paluskar D.V. {2021}; Raag Ramkali "Khayal AIR Raagam" [video file] retrieved from https://youtu.be/F22c85xmSPM?si=Z-cZ6mbr-FDgHhYr
13. Vidushi Guha S. 'Agra Gharana' {2014}; Raag Bhairav Chota Khayal Teentaal, "Prabhu Data Saban Ke" [video file] retrieved from https://youtu.be/3khuCX8OZrk?si=ELkyksoqMV3fccUA
14. Vidushi Chakraborty K. {2023}; Raag Bhairav khayal Ektaal Madhyalay Bandish, "Uthat Baaj Murli Aaj" [video file] retrieved from https://youtu.be/QmyVUJVSGkE?si=FZx7MyBnYvUwkIpX